लॉकडाउन डायरी

कही अनकही कहानियाँ

डॉ. प्रियंका वैद्य

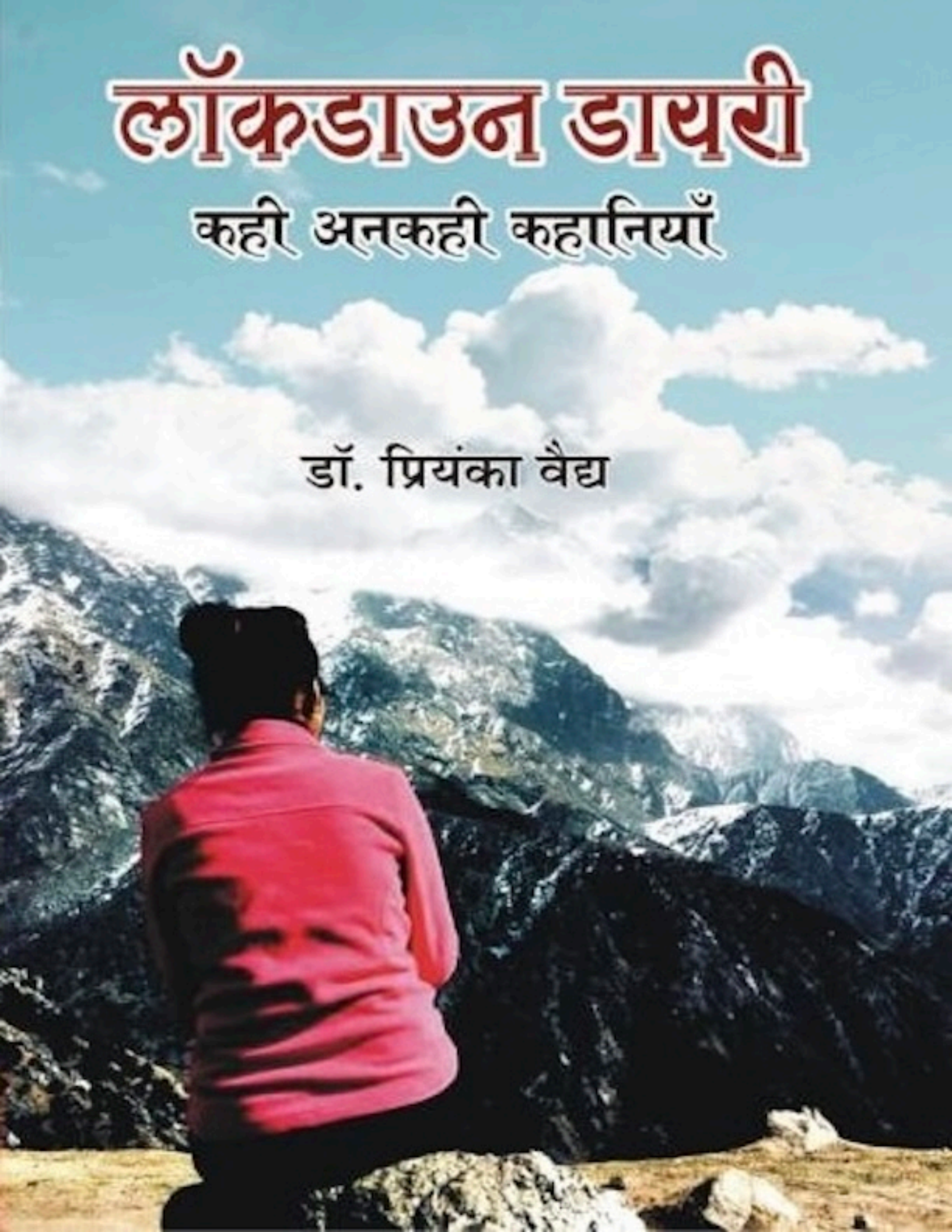

लॉकडाउन डायरी

कही अनकही कहानियाँ

डॉ. प्रियंका वैद्य

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जनवरी, 2026

© डॉ. प्रियंका वैद्य

श्री इन्द्र पाल वैद्य

श्री तारदें पाल वैद्य और श्रीमती चाँद वैद्य

आशुतोष वैद्य और इन्दु वैद्य

दीप्ति और विवेक

चैतन्य और शिवांश

को समर्पित

भूमिका

लघु कथाएं लॉकडाउन पर आधारित है। जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं। लॉकडाउन का आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य, प्राकृतिक संवाद, जीवंत पहलू, घर और घर से बाहर, देश और विदेश की सीमाओं को लांघती हैं। लॉकडाउन ने जिंदगी की अनसुलझी पहेलियों को सुलझा दिया, ठहरना और मनन करना सिखा दिया । भारतवर्ष में लॉकडाउन के विश्वव्यापक प्रभाव को देख कलम रुक नहीं पाई और चिर निरंतर बहती नदी मानो रुक गई। श्वास कदाचित् ख़ौफ़ से कम और आत्म अनुभूति से ज़्यादा रुके। अनगिनत लोगों के लिए प्रार्थना में हाथ जुड़ गए और प्रकृति जिसकी गोद के स्पर्श को कभी अनुभूत नहीं किया था वो अंतरआत्मा का अभिन्न अंग बनने लगी। रिश्तों को समझा और ज़िंदगी के दीये में लौ पुनः जलने लगी। इस कलम को प्राण देने वाले मेरे पिता तारेंद्र पाल वैद्य और साँसों को जीवंतता देने वाली मेरी माँ चाँद वैद्य के लिए आत्मा स्पंदित हो उठी। भाई आशुतोष वैद्य और भाभी इंदु वैद्य जो इस कठिन परिस्थिति में घर घर अनाज बाँट रहे थे उनसे नई प्रेरणा मिलने लगी । चौतन्य और शिवांश को दादा दादी के सानिध्य में जीवन की दिशा को निर्धारित करने वाले संस्कार मिले । कर्मयोग, राजयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग सब अपरिभाषित परिभाषित होने लगा और जीवन की सार्थकता सिद्ध होने लगी दीप्ति और विवेक तो मानो विदेश से ही मीलों का सफ़र तय करके दिल पर दस्तक दे रहे थे। लॉकडाउन जिंदगी को और जिंदगी पन्नों को लफ्ज देने लगी। विस्मय ने यूँ आँचल थामा

कि सब छूट गया और अचम्भित हो सब इतना परिपूर्ण और ख़ूबसूरत लगा कि सब दीवारें छोटी लगी, मैं कोनों से बाहर भागी और अनंत आकाश अनंत उम्मीदों के साथ इंतजार कर रहा था, दुनिया कितनी संकीर्ण हो गयी थी और मैं कितना कम देख रही थी, बस जहाँ तक नज़र पहुँची वही मेरा था जबकि जहाँ नज़रें और बाहें नहीं पहुँची वही अपना है, अनन्तता ही अपनी है क्योंकि वो किसी एक की नहीं, मैं खुश हूँ क्योंकि न अनंतता कोई मुझसे छीन सकता है न मैं किसी के आगे उसके लिए हाथ फैलाऊँगी। विस्मयकारी हुई तो पंख फैले और बंधन छूटे, बंधन से खुद टूटे दायरों से जीवन बंध गया था और मैं बन गयी संकीर्ण सीमित दायरों की चौकीदार, विदित एकाएक कि कितना विशाल है ये जगत और सब इस हुआ विशाल जगत में छूट जाएगा, सब छोड़ अनंत को अपनाना आनंद और मुक्ति के द्वार की ओर कदम बढ़ाना है।

अनुक्रम

पिघलती बर्फ	7
कहना मुश्किल था !	13
आज़ादी	20
पलाश के फूल	26
डायरी	30
घर	36
टाइपराइटर	45
चंद्रताल की तरफ़	50
वक़्त	55
चिट्ठियाँ नहीं मिली	61
कश्मकश	67
अंतहीन सफर	70
हार्मोनीयम	74
रुकना ज़रूरी है !	80
जिजीविषा	85
व्हील चेयर	92
पनियल आँखें	98

अभिलाषा 102

चाबियाँ 107

लव ऑनलाइन 114

अनुराग होम स्टे 120

रैन बसेरा 128

छतरी 134

मुक्ति का मार्ग 144

पश्मीना शॉल 151

सड़क थी या नदी 156

पिघलती बर्फ

इस बार तो नवम्बर में ही रास्ते बंद हो गए।

जिंदगी रुक गयी।

रास्ते तन्हा हो गए, दूर तक फैली बर्फ की चादर से ढकने लगे, मानो गुम होने की कगार पर किसी राही को ढूँढ रहे हों।

हाँ! कुछ रास्तों को राही की तलाश रहती है, जैसे हाँफती गर्म साँसों से बर्फ पिघल जाएगी।

कहाँ पिघलती है बर्फ और कहाँ गूँजते हैं सन्नाटे ?

ओह! रास्ते भी मौसमों की आगोश में खो गए, शायद चादरों को ओढ़ सो गए होंगे। क्या उठेंगे कभी?

नहीं उठा तो कैक्टस को पकड़ तय करूँगा मैं कठिन रास्ते और जब ख़ून निकलेगा तो लाल बर्फ़ कदाचित किसी प्रकृति के लॉकडाउन में बंद हुए मुसाफिर को कुछ समय के लिए रास्ता दिखायेगी।

कहीं मेरा पैर उस सफेद चादर की चिकनाहट से फिसल गया तो मैं बिना किसी के कानों में अपनी कहानी रसीद किए खो जाऊँगा, कायनात की दूर तक फैली ख़ामोशी में बोलूँगा और गूँजूँगा उन छोटी जरूरतों में बजती घंटियों में जो किसी गडरिए ने बांधी होंगी अपनी गौरी के गले में।

अनंत कल्पना की उड़ान मुझे आसमानों में ले जाती है। मैं कैक्टस को घूरता हूँ, घूरने से उसके काँटे नहीं चुभते, फिर मैं उसके पास जाता हूँ और उसका स्पर्श महसूस करता हूँ उस वीराने में, वो मुलायम लगता है बर्फ से ज़्यादा।

वो नहीं पिघलता बर्फ की तरह।

साथ नहीं छोड़ता मेरा, थामे रहता है मुझे।

वो साथ रहता है सदा, धरा का परिचायक, जिंदगी साँस लेती है वीरानों में भी।

वहाँ कुछ सुनाई देता है तो केवल अपनी साँसों का स्पंदन।

जब बर्फ घुटनों से ऊपर पहुँच जाती है तो मैं नहीं चल पाता।

कहीं जाना भी तो नहीं होता, कहीं पहुँचना नहीं है, मंजिल नहीं दिखती तो रास्ते भी नहीं है।

चल पड़ता हूँ कहीं भी, पूरी कायनात ही घर लगती है, परंतु कायनात का लॉकडाउन कभी कभी डराता बहुत है।

रात को आसमान ताकते भूल जाता हूँ मैं खुद का होना।

अतीत वर्तमान एक हो जाता है।

तस्वीरें भी नहीं है अतीत की पेशानी को देखने के लिए, एक दिन बर्फ के फाहे खिड़की से आए और ले गए चेहरे अपने साथ।

झाँक रहा था आसमान में बिखरे सन्नाटे की ओर।